कर्ण पिशाचिनी साधना

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनी कर्णे मे कथय स्वाहा ॥

विनियोग

॥ अस्य श्रीकर्णपिशाचिनीमन्त्रस्य पिप्लादऋषि: निचृद छन्द:
कर्णपिशाचिनीदेवता अभीष्ट सिदरथे जपे विनियोग ॥

षडंगन्यास

ॐ हृदयाय नम:
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा
ॐ कर्णपिशाचिनी शिखायै वोषट
ॐ स्वाहा अस्त्राय फट

ध्यान

चिता पर आसान लगाकर कर बैठी हुई नर मुण्ड माला से विभूषित अपने कर कमलो में अस्थि की मणियों को धारण की हुई
मनुष्य की आंतो से प्रसन्न रहने वाली मैला, कुचैला , फटा कुवस्त्र धारण करने वाली कर्णपिशाचिनी का मैं ध्यान करता हूँ

स्थान और जप संख्या

श्मशान में अथवा शव पर बैठ कर एकाग्र मन से पिशाचिनी मंत्र का एक लाख जप करे